CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF 2021 - 6.169

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 28th Jan. 2022, Revised on 27th Feb. 2022, Accepted 26th Mar. 2022

शोध–आलेख

जननांकीय आधार पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की साइबर अपराध के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

* सुनीता कुमारी शर्मा, *शोधार्थी*
डॉ. वेद प्रकाश शर्मा, *शोध निदेशक*
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर
E-Mail- sunitakumarisharma1975@gmail.com , Mob- 9352827201

मुख्य शब्द– *साइबर अपराध, जागरूकता, शिक्षक प्रशिक्षणार्थी आदि।*

Abstract

आज से पहलें किसी भी प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त करना आसान नहीं था लेकिन जब से इन्टरनेट को विकसित किया गया तब से इन्टरनेट के माध्यम से दुनियां में किसी भी कोने की जानकारी हम इसके माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। जब हम इन्टरनेट से जुडे होते हैं तो यह प्रक्रिया ऑनलाईन कहलाती है।

आज हम सभी इन्टरनेट का प्रयोग सम्प्रेषण के लिए करते हैं। खोजने के लिए मनोरंजन के लिए, खरीददारी करने के लिए और शिक्षा के क्षेत्र में भी करते हैं। आज प्रत्येक व्यक्ति इन्टरनेट का प्रयोग किसी न किसी रूप में अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कर रहा है। लेकिन इन्टरनेट की पूरी जानकारी न होने के कारण वह जाने–अनजाने में कई अपराधों को अंजाम दे देते हैं। जिससे वह बेखबर रहता है इन्ही इन्टरनेट अपराधों में साइबर अपराध शामिल है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध में जननांकीय आधार पर महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थी दोनों की साइबर अपराध के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

प्रस्तावना

विश्व के लगभग सभी नेटवर्क इंटरनेट से जुडे हुये हैं। इंटरनेट विभिन्न सूचना संसाधनों और सेवाओं जैसे – ऑनलाईन चैट, इलेक्ट्रोनिक मेल, ऑनलाईन गेमिंग, इंटरलिंक्ड, हाइपर टेक्सट दस्तावेज एवं वर्ल्ड वाइब वेब इत्यादि को वहन करती है।

इन्टरनेट के माध्यम से कुछ क्षणों में दुनियां के हर कोने की खबर घर बैठे हम अपने कम्प्यूटर पर ले सकते हैं। इस भौतिक युग में सभी लोग इन्टरनेट का प्रयोग अपने कार्य को सरल बनाने के लिए करते हैं। वे कुछ मिनटों में ही अपना सम्पूर्ण कार्य इंटरनेट के द्वारा कर लेते हैं। लेकिन वे इंटरनेट की पूरी जानकारी न होने के कारण या सुविधाओं का फायदा उठाने के लिए या थोडे लालच

के लिए जाने–अनजाने में कई अपराध कर बैठते हैं। जिनमें वर्तमान में सबसे तेजी से बढने वाला अपराध साइबर अपराध है। फिशिंग, हैकिंग, वायरस का हमला, क्रेडिट कार्ड, फ्रॉड, फोर्नोग्राफी, स्पूफिंग, वाई फाई का दुरूपयोग आदि।

युवाशक्ति असीम है। सही वक्त पर सही मार्गदर्शन से वे देश को हर क्षेत्र में आगे ले जा सकती है। नहीं तो देश को विनाश की ओर भी ले जा सकती है। यदि सूर्य चन्द्रमा एवं बादल अपनी गुण धर्मिता छोड दे तो सृष्टि में संकट उत्पन्न हो जायेगा। उसी प्रकार मानव अपनी गुण धर्मिता को छोड दे, पतित, विध्वंसात्मक, विघटनकारी, आपराधिक कार्यों में प्रवृत रहे तो उसका जीवन निरर्थक होगा तथा साथ में वह मानवता के लिए भी कलंक बन जायेगा। उसी प्रकार आज हम बात करें साइबर अपराध की तो साइबर अपराध अन्य अपराधों से भिन्न है। क्योंकि यह इन्टरनेट से जुडा हुआ है। इंटरनेट एक महाजाल है और दुनिया का सबसे बडा और व्यस्त नेटवर्क है। दुनिया के कम्प्यूटरों का आपस में जुडना ही इंटरनेट है। विश्व के लगभग सभी नेटवर्क इंटरनेट से जुडे हुये हैं।

इंटरनेट विभिन्न सूचना संसाधनों और सेवाओं जैसे – ऑनलाईन चैट, इलेक्ट्रोनिक मेल, ऑनलाईन बैकिंग, फाइल ट्रांसफर और शेयरिंग, ऑनलाईन गेमिंग, इन्टरलिंक्ड, हाइपर टेक्सट, दस्तावेज एवं वर्ल्ड वाइब वेब इत्यादि को वहन करती है।

इंटरनेट के माध्यम से कुछ क्षणों में दुनियां के हर कोने की खबर घर बैठे हम अपने कम्प्यूटर पर ले सकते हैं। इस भौतिक युग में सभी लोग इंटरनेट का प्रयोग अपने कार्य को सरल बनाने के लिए करते हैं। वे कुछ मिनटों में ही अपना सम्पूर्ण कार्य इंटरनेट के द्वारा कर लेते हैं।

लेकिन वे इंटरनेट की पूर्ण जानकारी न होने के कारण या सुविधाओं का फायदा उठाने के लिए या थोडे लालच के लिए जाने अनजाने में कई अपराध कर बैठते हैं। जिसमें वर्तमान में सबसे तेजी से बढते अपराध साइबर अपराध है फिशिंग, हैकिंग, वायरस का हमला, क्रेडिट कार्ड फ्रॉड, फोर्नोग्राफी, स्पूफिंग, वाई फाई का दुरूपयोग आदि।

अध्ययन का औचित्य

भारत देश में प्रत्येक 10 मिनट में एक साइबर अपराध होता है। साल 2017 के पहले 6 महिनों में प्रत्येक 10 मिनट पर एक साइबर अपराध होने की बात सामने आयी है। यह 2016 के आंकडे से ज्यादा है। जब प्रत्येक 12 मिनट में एक अपराध होता था।

इनमें जालसाजी और स्कैनिंग जैसे अपराध शामिल हैं। इंडियन कम्प्यूटर इमरजेन्सी रिस्पॉन्स टीम के मुताबिक जनवरी से जून 2017 के बीच साइबर अपराध के 27482 मामले दर्ज किये गये। जालसाजी, स्कैनिंग, साइट में घुसपैठ करना, साइट को बिगाडना, वायरस पहुंचाना, रेन्सयवेयर और साइट का काम ठप करना आदि शामिल है। एक्सपर्ट के मुताबिक भारत में इंटरनेट से जुडते लोगों की बढती हुई जनसंख्या के कारण साइबर क्राइम को होने से पहले ही पहचानना और रोकना बहुत जरूरी है। इंटरनेट का उपयोग करना प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हो गया है। परन्तु वह कई असावधानियों के चलते साइबर अपराध का शिकार हो जाता है। अतः साइबर अपराध से बचने के लिए भावी पीढी को या प्रत्येक नागरिक को जागरूक होना जरूरी है। अतः हमें शिक्षा के द्वारा ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना जो स्वयं साइबर अपराध के बारे में जानकारी रखते हों और विद्यार्थियों को इसके बारे में जागरूक कर सके।

अतः शोधार्थी ने साइबर अपराधों के प्रति जागरूकता संबंधी जानकारी प्राप्त करने में रूचि प्रकट करते हुये समस्या को शोध समस्या के रूप में चयन किया है। लेकिन फिर भी बहुत सी समस्याएं व प्रश्न शोधार्थी मन में उभर रहे हैं जो निम्न प्रकार हैः–

1. क्यों लोग साइबर अपराध के शिकार हो जाते हैं।

2. क्यों शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में साइबर अपराध के प्रति जागरूकता आवश्यक है।

3. क्यों साइबर अपराधों के प्रकारों के बारे में जानकारी आवश्यक है।

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने हेतु शोधार्थी ने अपनी शोध को वाक्यात्मक रूप प्रदान किया है।

समस्या कथन :– उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर शोधकर्ता ने शोध के लिए जिस समस्या का चयन किया उसके उद्देश्य निम्नलिखित है:–

अध्ययन के उद्देश्य

1. साइबर अपराध के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का अध्ययन।
2. साइबर अपराध के प्रति महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. साइबर अपराध के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. साइबर अपराध के प्रति स्नातक एवं परास्नातक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. साइबर अपराध के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का कम्प्यूटर कक्षा के साथ साहचर्य का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. साइबर अपराध के प्रति महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
2. साइबर अपराध के प्रति ग्रामीण एवं शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
3. साइबर अपराध के प्रति स्नातक एवं परास्नातक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता में सार्थक अन्तर पाया जाता है।
4. साइबर अपराध के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की जागरूकता का कम्प्यूटर कक्षा के साथ सार्थक साहचर्य नहीं पाया जाता है।

अनुसंधान की विधि

प्रस्तुत शोध की समस्या को भलिभांति समझकर अध्ययन से संबंधित साहित्य का अवलोकन व अनुसंधान हेतु सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

अध्ययन के उपकरण

अध्ययन को पूर्ण करने हेतु निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया है।

साइबर जागरूकता मापने के लिए डॉ. राजशेखर द्वार निर्मित (साइबर क्राइम अवेयनैस स्केल (CCAS-RS) मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया गया है।

जन समष्टि

अध्ययन के लिए जयपुर शहर के शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय में अध्ययन करने वाले सभी शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जन समष्टि का प्रतिनिधितत्व करते हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 313 महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी व 119 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को सौद्देश्य न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

परिणामों का प्रस्तुतिकरण तथा उनकी व्याख्या

उद्देश्य 2 से संबंधित प्रदत्त विश्लेषण परिणाम तथा उनकी व्याख्या–

Level of cyber crime behaviour * Gender Crosstabulation

			Gender		Total
			Male	Female	
Level of cyber crime behaviour	Below average awareness	Count	0	9	9
		% within Gender	0.0%	2.9%	2.1%
	Moderate / Avearge awareness	Count	52	126	178
		% within Gender	43.7%	40.3%	41.2%
	Above avearge awareness	Count	22	59	81
		% within Gender	18.5%	18.8%	18.8%
	High awareness	Count	26	66	92
		% within Gender	21.8%	21.1%	21.3%
	Excellant awareness	Count	19	53	72
		% within Gender	16.0%	16.9%	16.7%
Total		Count	119	313	432
		% within Gender	100.0%	100.0%	100.0%

Chi-Square Tests

	Value	df	Asymp. Sig. (2-sided)
Pearson Chi-Square	3.748[a]	4	.441
Likelihood Ratio	6.123	4	.190
Linear-by-Linear Association	.008	1	.928
N of Valid Cases	432		

a. 1 cells (10.0%) have expected count less than 5. The minimum expected count is 2.48.

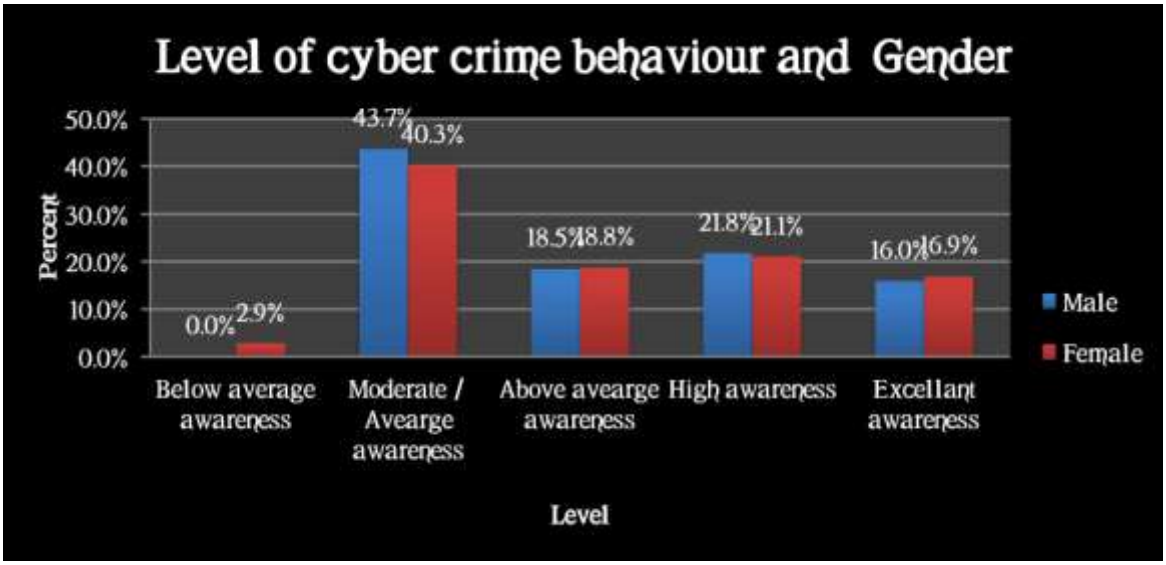

Group Statistics

Gender		N	Mean	Std. Deviation	Std. Error Mean
CCAS	Male	119	127.88	13.405	1.229
	Female	313	128.10	14.002	.791

Independent Samples Test

		Levene's Test for Equality of Variances		t-test for Equality of Means						
		F	Sig.	t	df	Sig. (2-tailed)	Mean Difference	Std. Error Difference	95% Confidence Interval of the Difference	
									Lower	Upper
CCAS	Equal variances assumed	.027	.870	-.145	430	.884	-.217	1.491	-3.146	2.713
	Equal variances not assumed			-.148	221.779	.882	-.217	1.462	-3.097	2.664

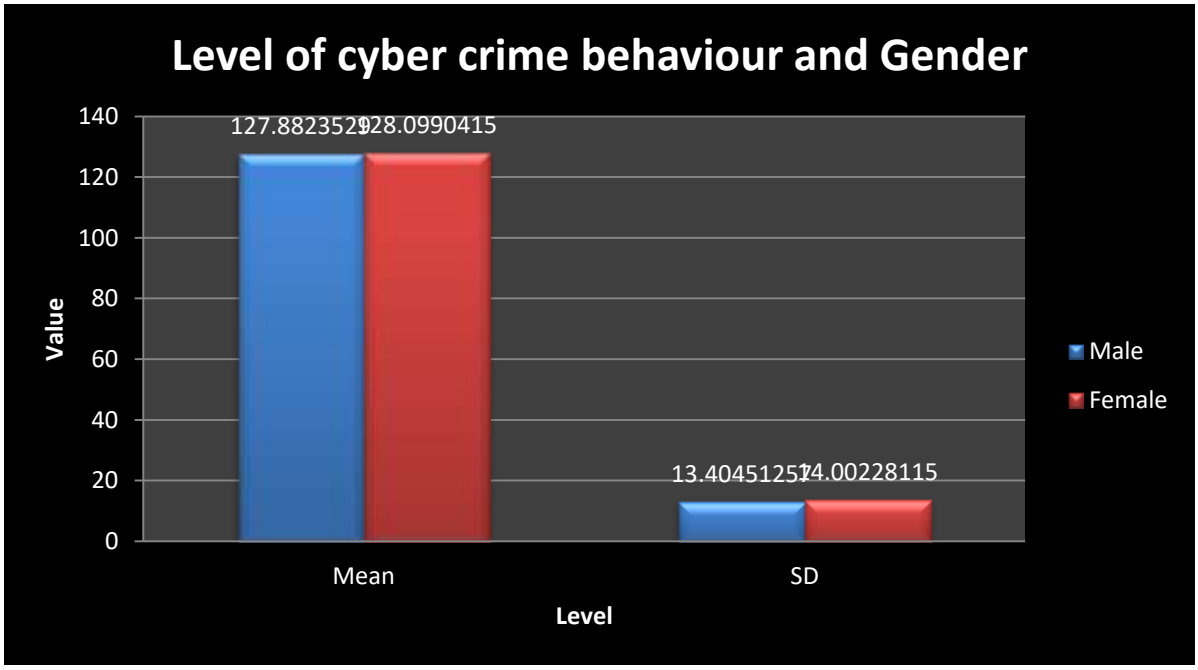

विश्लेषण – प्रथम प्रश्न के लिए प्रशिक्षणार्थियों के लिंग के आधार पर सहमति का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जैसा कि उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कुल 119 पुरूष प्रशिक्षणार्थियों में लगभग 83 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियों प्रश्न संख्या 1 के लिए सहमति व पूर्ण सहमति जताई वहीं कुल 313 महिला प्रशिक्षणार्थियों ने सहमति, पूर्ण सहमति जताई। दोनों क सहमति के प्रतिशत अन्तर के साहचर्य की सार्थकता ज्ञान करने के लिए स्वातंत्र गणना करने के लिए प्रियर्सन के काई वर्ग का उपयोग किया गया काई वर्ग मान .441 स्वातंत्र कोटि तीन पर .441 पाया गया जो कि इसकी तालिका मान डिग्री ऑफ फ्रिडम काई स्कावायर की टेबल में .01 की सार्थकता स्तर पर मान 11.34 है एवं .05 की सार्थकता स्तर पर मान 7.82 है जो इसकी तालिका मान से कम है। अतः प्रशिक्षणार्थियों के लिए सहमति का सार्थक साहचर्य नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. डॉ. परांजये ना.विः अपराध शास्त्र, दण्ड प्रशासन एवं प्रपीडन शास्त्र।

2. "Increase in school performance (performance rates) [Social Impact]. INCLUD-ED, Strategies for inclusion and social cohesion from education in Europe (2006-2011). European Union's Sixth Framework Programme (FP6/2006-2012)". SIOR, Social Impact Open Repository.

Journals

1. Alam, K. & Halder, U.k. (2018). Aggression And Academic Achievement of higher Secondary Students. North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities. 4(4). ISSN: 2454-9827.

वेबसाइट

https://www.researchgate.net/publication

*https://cn.wikipedia.org/wiki/cybercrime

**https://www.jagran.com>jhansi

**https://react.etvbharat.co>city

**** Corresponding Author***

सुनीता कुमारी शर्मा, *शोधार्थी*

डॉ. वेद प्रकाश शर्मा, *शोध निदेशक*

महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी, जयपुर

E-Mail- sunitakumarisharma1975@gmail.com , Mob- 9352827201